



उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ-226005

Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 873/एनआरएम/डब्ल्यूबीएसएलएएजी/पीएल/2021

दिनांक: 06-08-2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 06 अगस्त, 2025 को वर्ष 2025-26 की सम्पन्न बारहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियों

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025-26 की बारहवीं बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 06 अगस्त, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, पादप रोग वैज्ञानिक; अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी; सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के कुलपति एवं कीट वैज्ञानिक व मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; पशुपालन विभाग; राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

बैठक में विशेष आमंत्री के रूप में लेफ्टिनेंट जनरल(से.नि.) योगेन्द्र डिमरी, उपाध्यक्ष, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश व उपकार के अध्यक्ष कैप्टन(से.नि.) विकास गुप्ता द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा इस ग्रुप की संस्तुतियों को और उपयोगी बनाने हेतु एवं इसकी महत्ता बढ़ाने हेतु अपना सुझाव दिया गया व कृषि विभाग द्वारा कृषकों तक त्वरित कृषि संबंधी सूचनायें पहुंचाने हेतु विकसित किये जाने वाले ऐप से अवगत हुये इस ऐप को शीघ्र ही प्रारंभ किये जाने का आवाहन किया।

सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (06-14 अगस्त 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य या सामान्य से अधिक रहने के साथ विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में कहीं कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान तापमान सामान्य के आसपास रहने की संभावना है।

चेतावनी: इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तरी तराई एवं उससे लगे हुए मध्यवर्ती क्षेत्रों में कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की सम्भावना है। प्रदेश के 22 जनपदों में बाढ़ की स्थितियां बनी हुई हैं अतः निरंतर सावधानी बरतें।

मानसून ऋतु (01 जून से 06 अगस्त, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 401.9 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष कुल 437.5 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 9 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 426.4 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 7 प्रतिशत कम कुल 397.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 363.3 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 36 प्रतिशत अधिक कुल 494.6 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

कृषि विभाग से दिनांक 28 जुलाई, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 99.48 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 93.79 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 65.20 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 100.31 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 8.22 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 2.82 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.28 लाख हे. के सापेक्ष 9.43 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 3.45 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 3.19 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है। मूंगफली की फसल लक्ष्य 3.70 के सापेक्ष 2.53 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है एवं उर्द के लक्ष्य 4.83 सापेक्ष 3.41 तथा मूंग के लक्ष्य 0.47 के सापेक्ष 0.39 की बुवाई की जा चुकी है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.40 की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार-विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गये:—

- बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में अधिक दिन पानी ठहरने की दशा में फसल नष्ट हो जाने पर, जलस्तर कम हो जाने पर अधिक अवधि वाली धान की पौध की दोबारा रोपाई सण्डा विधि से की जाय।
- जिन किसान भाईयों ने अभी तक धान की रोपाई/बुवाई नहीं की है अथवा यदि उनकी फसलें बाढ़ से प्रभावित हुई है तो किसान भाई धान की शीघ्र पकने वाली प्रजातियों यथा आईआर-64-सब-1, नरेन्द्र-97, सहभागी, नरेन्द्र 80, नरेन्द्र 2, मालवीय धान-2, शुष्क सम्राट 6.2.07, सीओ-51, पीआर-130, गोविंद की सीधी बुवाई करें।
- जलमग्नता/बाढ़ की स्थिति के कारण यदि धान में यूरिया की टाप ड्रेसिंग संभव न हो तो 2.5 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव करें।
- जलमग्नता के दुष्प्रभाव को कम करने के लिये एन.पी.के. मिश्रण (19:19:19) के दो प्रतिशत घोल को दो से तीन बार छिड़काव करें।
- बुन्देलखण्ड में संकेन (रेज्ड)-बेड विधि से दलहनी एवं तिल व मूंगफली की सह-फसली खेती को अपनाया जाय।
- मूंग/उर्द एवं लोबिया में पत्ती धब्बा (सर्कोस्पोरा) बीमारी के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- जिन क्षेत्रों में कम वर्षा हुई है वहां खेतों में मेडबन्दी करके नमी को संरक्षित करें तथा तालाबों, पोखरों एवं झीलों में संरक्षित वर्षा जल को फसलों की क्रान्तिक वृद्धि की दशाओं में सिंचित करने के लिये उपयोग में लायें।
- कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग कृषि रक्षा इकाई व कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह पर करें।
- बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में अक्टूबर माह में बोई जाने वाली गन्ने की फसल को प्राथमिकता दी जाये जिससे आगामी वर्ष में बाढ़ का समय आते-आते फसल का पर्याप्त विकास हो चुका हो।
- खरीफ प्याज की पौध की रोपाई कृषि विज्ञान केन्द्रों की सलाह से करें।
- केले की जी-9 प्रजाति के रोपण का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण करें।
- वृक्षारोपण अभियान में फलदार वृक्षों का भी रोपण करें।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।
- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत खुरपका एवं मुखपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000-8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000-4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।
- मौसम आधारित कृषि परामर्श की जानकारी लेने हेतु किसान भाई 'मेघदूत ऐप' का प्रयोग कर सकते हैं।
- स्थान विशिष्ट वास्तविक समय मौसम पूर्वानुमान की जानकारी हेतु 'ई ग्राम स्वाराज्य ऐप' का प्रयोग करें।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में डूबने की घटनाओं से बचने हेतु उफनाई हुई नदी, नहर, नालों, तालाब आदि में न जायें। बच्चों को पुलिया, ऊंचे टीलों से कूदकर स्नान करने से रोकें, अतिआवश्यक हो तभी पानी में उतरें। अन्य जल निकायों के घाटों पर रीति रिवाजों, संस्कारों का निर्वाहन करते समय सावधानी बरते।
- जनपदवार दैनिक मौसम पूर्वानुमान एवं चेतावनी <https://mausam-imd-gov-in/lucknow/mcdata/district-pdf> तथा ग्राम स्तरीय/क्षेत्रीय मौसम पूर्वानुमान <https://mausamgram-imd-gov-in/> पर प्राप्त किये जा सकते हैं।
- कृषक भाई कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं एफ.पी.ओ. से भी समय-समय पर सलाह लेते रहें।

धान की खेती

- पूर्वी उ.प्र. में अगस्त के प्रथम पक्ष में सुगंधित धान की किस्मों की रोपाई करें जिससे दाने की गुणवत्ता व सुगन्ध का विकास अच्छी तरह से हो सके।
- जुलाई के प्रथम पखवारे में रोपे गये धान में पहली टॉप ड्रेसिंग नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा का 25 प्रतिशत रोपाई के 25-30 दिन बाद यूरिया के रूप में करें।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने अथवा यूरिया के साथ 1000 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- धान में शीथ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. अथवा कार्बेन्डाजिम 2 प्रतिशत+मैकोजेब 63 प्रतिशत डब्लू.पी को प्रति हे. 500 से 750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें

श्री अन्न की खेती

- बाजरा की उन्नतशील संकुल किस्मों यथा धनशक्ति, आई.सी.एम.बी.-155, डब्लू.सी.सी.-75, न.दे.पफ.बी.-3 (नरेन्द्र चारा बाजरा-3), राज-171 तथा संकुल किस्मों 86 एम. 84, आई.सी.एम.एच.-451, पूसा-322 तथा पूसा-23 की बुवाई करें।

मूंग की खेती

- मूंग की किस्मों यथा आजाद मूंग-1, पंत मूंग-1, पंत मूंग-3, पूसा-1431, मेहा 99-125, एम.एच.-2.15, टी.एम.-9937, मालवीय, जनकल्याणी, मालवीय, जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, मालवीय ज्योति, पंत मूंग 4, नरेन्द्र मूंग-1, पी.डी.एम.-11, आशा की बुआई करें।

अरहर की खेती

- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्के की फसल अधिक पानी के प्रति संवेदनशील है अतः खेत में अधिक पानी की दशा में जल निकासी की व्यवस्था करें।
- मक्का की बुवाई के 45-55 दिन पर्याप्त नमी की दशा में बाद नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्के में फॉल आर्मी वर्म के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी अथवा इमामेक्टिन बेनजोइट 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा थायोमेथाक्सॉम 2.6 प्रतिशत + लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में बैक्टीरियल रॉट बीमारी के लक्षण दिखने पर संक्रमित पौधे को काटकर नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01 प्रतिशत का गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु खाली खेत में ढ़ैचा की बुवाई की है तो 50 से 55 दिनों में उसे पलट दें।
- यदि गन्ने की लंबाई पांच फुट हो गई हो तो ढ़ाई फुट की ऊँचाई पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से पौधों पर छिड़काव करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती 6-8 फीट की ऊँचाई पर मचान विधि से करनी चाहिए। मचान बनाने के लिए बांस या लोहे के खम्भे का प्रयोग करना चाहिए।

- फूल गोभी की मध्य किस्में पूसा सेंथेटिक, पंत सुभ्रा, पूसा हिमज्योति, पूसा सुभ्रा, पूसा दिपाली, पूसा हाईब्रिड-2, पूसा शरद, पंत गोभी-4, मोनालीसा आदि किस्मों का 500-600 ग्राम बीज प्रति हे० की दर से नर्सरी तैयार कर लें।
- भिण्डी की खरीफ में बुवाई हेतु मौसम अभी भी अनुकूल है। इसकी बीज दर 10-12 किग्रा. प्रति हे० तथा संकर किस्मों के लिए 5-8 किग्रा. बीज पर्याप्त है।
- खरीफ मौसम में लोबिया की खेती करने के लिए 15-20 किग्रा० बीज प्रति हे० पर्याप्त होता है, बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम जिवाणु से उपचरित कर लेना चाहिए।
- खरीफ ऋतु की सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5-6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली० मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10-15 से.मी. ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।
- सब्जियों में मिक्स क्रापिंग को बढ़ावा दिया जाय तथा जल निकास का उचित प्रबंध करें।
- पूर्व में रोपित बैंगन व मिर्च तथा गोभी के पौधों पर मिट्टी चढ़ायें तथा गोल बैंगन की तैयार पौध की रोपाई करें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों का छिड़काव करें।
- बेहन हेतु गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- अदरक के कंद सड़न रोग से बचाव हेतु जल निकास का उचित प्रबंध करें तथा प्रकोप होने पर चेस्टनट कम्पाउंड (11 भाग अमोनियम कार्बोनेट+2 ग्रा. कॉपर सल्फेट) का छिड़काव करें।
- मिर्च में विषाणु रोग हेतु संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल-ओ-डिमेटान 25 ई.सी. 01 मि.ली./ली. पानी अथवा इमिलाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत की 01 मि.ली. प्रति तीन लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

बागवानी

- आम की गुठली, अमरुद, कटहल, कागजी नींबू आदि के बीजों की बुवाई उठी हुई क्यारियों अथवा पॉलीथीन की थैलियों में करें।
- आम, अमरुद, लीची, आंवला, बेल, जामुन, नींबू, चिरौंजी, लसोढ़ा, महुआ तथा अन्य फलदार पौधों की उन्नत किस्मों का रोपण करें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई ग्रीन, गौरजीत, लखनऊ सफेदा को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें।
- फलों की गुणवत्तायुक्त पौध हेतु उद्यान विभाग की पंजीकृत पौधशालाओं, कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विज्ञान केन्द्रों की पौधशालाओं तथा केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से सम्पर्क करें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 मिलीग्राम 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा 10 से 15 दिन के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।
- तराई क्षेत्रों में आम का शूट गाल सिला कीट के प्रकोप से बचने के लिये डाईमेथोएट अथवा क्विनॉलफास (2 मिली/ली. पानी) का छिड़काव खुले मौसम में करें।
- आम में जाला बनाने वाले टेंट कैटरपिलर कीट की रोकथाम के लिये जालों की सफाई करते हुये क्विनॉलफास (2 मिली/ली. पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- नैपियर घास की जड़ों/रूट स्लिप की रोपाई करें, जिससे 4 से 5 वर्ष तक हरा चारा लगातार पशुओं को प्राप्त होता रहे।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- घोंघेयुक्त तालाबों के आस-पास पशुओं को न चरायें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं को गड्ढों में भरे गंदे पानी को पीने से बचायें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं०-1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- पंडित दीन दयाल उपाध्याय योजना के अन्तर्गत मण्डल/जिला स्तर पर पशु आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है, इन मेलों में निःशुल्क चिकित्सा, दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, लघु शल्य चिकित्सा, आल्ट्रासाउण्ड मशीन द्वारा गर्भ परीक्षण, पशु धन बीमा तथा पशुपालन कार्य हेतु इच्छुक पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड के अन्तर्गत पशुपालन घटक के अधीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही साथ गोष्ठियों का आयोजन भी सम्पादित किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय पशु चिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते हैं।

मत्स्य पालन

- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000-4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि.ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15-20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- तालाब में जल स्तर 1.5-2 मीटर बनाए रखें।
- तालाब में वर्षा का पानी आने से यदि जल अशुद्ध हो जाए या अधिक ठंडा हो जाए तो जल की आंशिक निकासी कर साफ पानी भरें।
- जल का पीएच 7-8 के बीच बनाए रखें। आवश्यकता हो तो चूना (200-300 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें।
- पानी में ऑक्सीजन की मात्रा पर्याप्त रखें तथा सुबह के समय एरेटर का उपयोग करें।
- बारिश के समय चारा डालने से बचें, क्योंकि अधिक चारा अपचय होकर जल को प्रदूषित कर सकता है।
- जल को कीटाणुरहित रखने हेतु सप्ताह में एक बार पोटाश (2-3 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें।
- जल की पारदर्शिता 30-40 सेमी के बीच होनी चाहिए। यदि बहुत कम हो जाए तो खाद डालना बंद करें।
- वर्षा के समय तालाब की मेड़ को मजबूत रखें, कहीं से पानी का रिसाव न हो।
- जलनिकास स्थल पर जाली लगाएं ताकि मछलियाँ बाहर न निकल सकें।

रेशम

- मानसून व्यवसायिक फसल का कीट पालन 20 से 25 अगस्त के मध्य प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु कीटपालक/किसान 3 चक्रों में उपकरणों, कीट पालन भवन का विशुद्धीकरण का कार्य पूर्ण कर लें।
- टसर रेशम कीटपालन हेतु समस्त कार्यवाही यथा विशुद्धीकरण कर लें।
- कृषक/कीटपालक ई-डिस्ट्रिक्ट विभागीय यू.आर.एल. <http://sericulture.eservicesup.in> पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाणु मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554 ।

वानिकी

- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- वर्षा के मौसम में सर्पदंश की स्थिति से बचने हेतु रात के समय घर से बाहर टार्च लेकर जाय व घर की दीवारों व छिद्रों को बंद रखें तथा हल्का सा कैरोसिन या फिनाइल छिड़क दें इसकी गंध से सांप चले जाते हैं।
- वर्षा के मौसम में पेड़, टेलीफोन व बिजली के खंभों के नीचे कदापि शरण न लें। ऐसी स्थिति में खंभों में करंट उतरने की संभावना अधिक रहती है।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनांक 21 अगस्त, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोट:-

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाइट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।



(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपि: उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेंगे।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।

19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिमिगनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
49. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।



(विनोद कुमार तिवारी)

प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राफ वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की बारहवीं बैठक
दिनांक 06 अगस्त, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. लेफ्टिनेंट जनरल(से.नि.) योगेन्द्र डिमरी, उपाध्यक्ष, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश।
3. कैप्टन(से.नि.) विकास गुप्ता, अध्यक्ष, उपकार, लखनऊ।
4. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
5. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी.), उपकार, लखनऊ।
6. डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.शि.त.ह.), उपकार, लखनऊ।
7. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
8. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
9. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
10. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
11. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
12. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, अनुवांषिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
13. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
14. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
15. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ (ऑनलाइन)।
16. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
17. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राफ वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
18. श्री आदित्य सिंह, सीनियर टेक्नीकल असिस्टेंट, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
19. डा. मनोज कुमार त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।
20. श्री पवन कुमार, डी.एच.ओ., उद्यान विभाग, उत्तर प्रदेश।
21. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
22. श्री आशीष कुमार सिंह, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ।
23. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
24. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
25. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
26. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, शुआट्स, प्रयागराज।